Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 09, pp 134-138, September 2025

हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य का विश्लेषण (आधुनिक काल के संदर्भ में।)

श्रीमती हेमलता पाण्डेय

व्याख्याता शिक्षा विभाग (एम.ए. हिन्दी साहित्य, राजनीति शास्त्र, एम.एड.), ***बी.टी.आई.ई. महाविद्यालय सागर (म.प्र).***

सारांश:

दलित साहित्य का इतिहास लगभग सौ वर्ष पुराना है। अनेक विद्वानों ने दलित शब्द को अनेक अर्थों में प्रयोग किया है। दलित विमर्श जाति आधारित अस्मिता मूलक विमर्श है। इसके केंद्र में दलित जाति के अंतर्गत शामिल मनुष्यों के अनुभवों, कष्टों और संघर्षों को स्वर देने का प्रयास किया गया है। यह एक भारतीय विमर्श है क्योंकि जाति व्यवस्था भारतीय समाज की बुनियादी संरचनाओं में से एक है। इस विमर्श ने भारत की अधिकांश भाषाओं में दलित साहित्य को जन्म दिया है। हिन्दी में दलित साहित्य के विकास की दृष्टि से 20वीं सदी के अंतिम दो दशक बहुत महत्वपूर्ण है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में साहित्यकारों ने विमर्श का एक नवीन आकार निर्मित किया है जिसमें दलित विमर्श को एक विस्तृत एवं व्यापक फलक प्रदान किया गया है। इस साहित्य में दलितों ने स्वयं अपनी पीडा को लेखक के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। भारतीय समाज में जो जातिगत बंटवारा हुआ है। वह पूर्णतः असमानता वर्चस्व और शोषण पर आधारित है। इस साहित्य को सबसे पहले डॉ भीमराव अंबेडकर ने दलित साहित्य का नाम दिया था। डॉ अम्बेडकर की अद्भुत सोच व मानवीय पीडा के प्रति संवेदना का ही परिणाम है कि दलित साहित्य हिन्दी साहित्य की प्रमुख धारा बन चुका है। आधुनिक काल में इस विमर्श ने नई ऊँचाइयों को प्राप्त किया है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। सामाजिक मुद्दों को उजागर करना साहित्य का ही काम है। अतः दलित साहित्यकारों ने इन्ही सामाजिक कुरीतियों को मिटाने और समाज में अपनी स्थिति को मजबूती एवं सम्मान के साथ स्थापित करने में साहित्य का सृजन किया है।

प्रस्तावना :-

दलित विमर्श वर्तमान काल का एक ज्वलंत मुद्दा है। स्वाभाविक रूप से साहित्य, समाज और राजनीति पर इसका व्यापक असर पड रहा है। भारतीय साहित्य में इसकी मुखर अभिव्यक्ति हो रही है। दलित आंदोलन दलित साहित्य का वैचारिक आधार है। डॉ. अम्बेडकर का संघर्ष ज्योतिबा फुले तथा महात्मा बुद्ध का दर्शन उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि है। दलित विमर्श में राष्ट्र पूरे भारतीय परिवार या कौम के रूप में है जबकि ब्राम्हणों के चिंतन में राष्ट्र इस रूप में मौजूद नहीं है। उनके चिंतन में एक ऐसे राष्ट्र की परिकल्पना है, जिसमें सिर्फ द्वविज है। दलित साहित्य को लेकर कई लेखक संगठन बन चुके है और आज यह एक आंदोलन का रूप लेता जा रहा है। बाल्मीकि के अनुसार दलितों द्वारा लिखा जाने वाला साहित्य ही दलित साहित्य है। उनके अनुसार दलित ही दलित की पीडा को बेहतर ढंग से समझ सकता है और उसे लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकता है। भारतीय समाज आदिकाल से ही वर्ण व्यवस्था द्वारा संचालित था। जो वर्ण व्यवस्था प्रारंभ में कर्म पर आधारित थी। बाद में यह जाति में बदल गयी। वर्ण व्यवस्था में गुण व कर्म के आधार पर वर्ण परिवर्तन का प्रावधान था। किन्तु जाति के बंधन ने उसे एक ही वर्ण या वर्ग में रहने पर मजबूर कर दिया। अब जन्म से ही व्यक्ति जाति से पहचाना जाने लगा। उसके व्यवसाय को भी जाति से जोड दिया गया। अब जाति व्यक्ति से हमेशा के लिए जुड गयी और उसे आधार पर ही उसे सवर्ण शूद्र उच्च या निम्न माना जाने लगा। शूद्रों को अस्पृश्य और अछूत माना जाने लगा। और उन्हें शिक्षा एवं अन्य सामाजिक किया कलापों से बंचित कर दिया गया। दलित साहित्य जन साहित्य है। यह साहित्य का लिटरेचर पर ऑफ एक्शन भी है। यह मानवीय मूल्यों की भूमिका पर सामंती मानसिकता के विरूद्ध आकोशजनित संघर्ष और विद्रोह से उपजा है। उसका स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार किया जाना चाहिए। उसके सामाजिक अस्तित्व की धारणा, समता, स्वतंत्रता और विश्व बंधुत्व के प्रति निष्ठा निर्धारित होनी चाहिये। यही दलित साहित्य का आग्रह है। दलित विमर्श का एक मात्र स्वर सामाजिक, परिवर्तन है। इसके प्रेरणास्त्रोत- डॉ अंबेडकर जिन्हें दलितों का मसीहा और मार्गदाता माना जाता है। इनके मार्गदर्शन में जो साहित्य का सृजन हुआ है। वही दलित साहित्य है।

दलित शब्द का आशय :-

मानव समाज में हर वह व्यक्ति या वर्ग दलित है जो कि किसी भी तरह के शोषण व अत्याचार का शिकार है। हिन्दी शब्द कोष में दलित शब्द का अर्थ है- पद दलित, दबाए हुए सताए हुए है। डॉ. ऐनीबेसेन्ट के अनुसार- डिप्रेस्ड शब्द का प्रयोग किया गया है। दलित पैंथर्स के घोषणा पत्र में अनुसूचित जाति, बौद्ध, कामगार, भूमिहीन, मजदूर, गरीब किसान, खानाबदोश जाति, आदिवासी आदि कहा गया है।

मूल शब्द:

दलित, मसला हुआ, रौंदा या कुचला हुआ। शूद्र, अछूत, बहिष्कृत, अस्पृश्य

उद्देश्य-

- प्राचीन से समकालीन साहित्य तक दलित साहित्य की स्थिति का विश्लेषण करना।
- हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य की स्थिति एवं पहचान के बदलते स्वरूप का विश्लेषण करना।
- हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य के बढते हुए प्रभाव को समझना।
- हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने का प्रयास करना।

हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य का प्रादुर्भाव :-

हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य उतना ही प्राचीन है जितना हिन्दी साहित्य का इतिहा। सिद्ध संत कवियों और गौरखनाथ की वर्णव्यवस्था विरोधी मध्यकालीन दलित संतों में क्रांति काल में उदय हुई। जिसकी समान्तर चितंन धारा की परम्परा का विकास ही हिन्दी दलित कविता का मूर्त रूप है। 19 सदी के दशकों में उत्तर प्रदेश में हिन्दी दलित कविता स्वामी अछूता नन्द शंकरानन्द जैसे कई अच्छे कवि इस हिन्दी आंदोलन के अंग बने। कुछ विद्वान 1914 में सरस्वती पत्रिका में हीराडोम द्वारा लिखित अछूत की शिकायत को पहली दलित कविता मानते है। कुछ विद्वान अछूतानन्द 'हरिहर' को पहला दलित कवि मानते है, उनकी कविताएं 1910 से 1927 तक लिखी गयी इसी श्रेणी में 40 के दशक में बिहारी लाल हरित ने दलितों की पीडा को कविता बद्ध ही नही किया अपितु अपनी भजन मण्डली के साथ दलितों को जाग्रत भी किया।

दलितों की दुर्दशा पर बिहारी लाल हरित की कविता है-

- तीन रूपये का जमीदार से ले लिया उधार अनाज,
- एक आने का दोस्तों ठहरा लिया था ब्याज,
- दादा का कर्जा पोते से नहीं उतरने पाया,
- तीन रूपये में जमीदार ने सत्तर साल कमाया।

ओम प्रकाश वाल्मिकी की कविता ठाकुर का कुआं दलितों की अतः पीडा को उजागर करती है, चूल्हा मिट्टी का मिट्टी तलाब की तालाब ठाकुर का, दलित आत्मकथा- दलित विमर्श सर्वप्रथम दलित साहित्य में आत्मकथाओं के रूप में सामने आया। इन साहित्यकारों ने अपनी ही कहानी के द्वारा अपनी पीडा अपमान एवं संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है। ओम प्रकाश वाल्मिकी की 'जूठन' पहली दलित आत्मकथा जिसमे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी दलितों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए जो एक लंबा संघर्ष करना पडा। जूठन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। तुलसीराम की आत्मकथा 'मुर्द हिया एवं मणिकार्णिका उत्तरप्रदेश के ग्रामीण अंचल में शिक्षा के लिए जूझते एक दलित की मार्मिक अभिव्यक्ति है। डॉ श्योराज सिंह बेचैन की आत्मकथा-'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' पर प्रकाशित हुई। जिसमें एक दलित बालक के बचपन का गला बहुत बेरहमी से घोटने का प्रयास किया गया। लेकिन वह डरा नहीं डटा रहा अपने शिक्षा के अधिकार को पाने के लिए। हिन्दी साहित्य की दलित कहानियों में सामाजिक तिरस्कार पीडा शोषण के विविध आयाम खुल कर और तर्क संगत रूप में अभिव्यक्त हुए है। मुद्रा राक्षस ने हिन्दी में दलित साहित्य के प्रादुर्भाव के सम्बन्ध में कहा है कि हिन्दी में दलित रचनात्मक लेखन का इतिहास तो पुराना है। लेकिन बीसवीं सदी के उत्तरार्ध के दो दशकों में दलित साहित्य में तेजी आयी और दलित प्रश्न एक केन्द्रीय मुद्दे के रूप में सामने आया।

भारतीय समाज का एक बडा हिस्सा जो अनेक वर्षों से दूसरों की गुलामी करता आया, उसे बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के प्रयत्नों से स्वतंत्र भारत में मौलिक, अधिकार प्राप्त हुये जिससे उनके रहन-सहन, सोच-विचार और चिंतन प्रणाली में परिवर्तन आया। और उसका प्रभाव उनके रचनात्मक एवं साहित्यिक योगदान पर भी दिखायी देता है।

हिन्दी साहित्य में दलित साहित्यकारों का योगदान :-

साहित्य में किसी को भी अपने विचार अभिव्यक्त करने से रोका नहीं जा सकता है। साहित्यकार किसी भी धर्म पर जाति पर देश पर लिख सकता है। प्रेमचन्द्र के कथा साहित्य में दलित विमर्श पर चर्चा करते हुए सुभाषचन्द्र ने लिखा है कि प्रेमचन्द्र ने अपनी रचनाओं में समाज की यथार्थ स्थिति को जिस कुशलता के साथ अभिव्यक्त किया वह भारत के हिन्दी रचनाकारों के लिए आदर्श है। समाज के सभी वर्णों के जीवन को उन्होनें अपनी लेखनी में स्थान दिया है। प्रेमचन्द्र की रचनाओं में दलितों के प्रति सहानूभूति करूणा एवं संवेदना के साथ शोषण अन्याय उत्पीडन से मुक्ति और मानवीय गरिमा व पहचान के लिए संघर्ष को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। प्रेमचन्द्र के उपन्यास कर्मभूमि, रंगभूमि, गोदान तथा कहानियाँ। मंदिर, दूध का दाम, गुल्ली-डण्डा, मंत्र, ठाकुर का सद्गति आदि कहानियाँ दलित जीवन के विविध पक्ष तथा रंगों को अभिव्यक्त करती है। यह बात दूसरी है। कि हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य का स्वर आजादी के बाद के साथ मुखर हुआ। केवल भारती का कहना है कि शक्ति "हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य से पुरूष ऊर्जा और ताकत डॉ. अंबेडकर के दर्शन से प्राप्त होती है। दलित साहित्य सामाजिक यथार्थ को आधार पर खडा है। अतः आलोचना के सामाजिक यथार्थ के महत्व को स्थापित करते हुए हिन्दी दलित साहित्य के प्रमुख साहित्यकार एवं विद्वान आलोचक ओमप्रकाश वाल्मिकी कहतें "सौन्दर्य शास्त्र की विवेचना में "सौन्दर्य", "बिम्ब" और प्रतीक को प्रमुख माना है। जबकि सौन्दर्य के लिए सामाजिक यथार्थ एक विशिष्ट घटक है। कल्पना और आदर्श की नींव पर खडे साहित्य को ओमप्रकाश वाल्मिकी अप्रासंगिक मानते है। दलित साहित्य का जन्म सामाजिक यथार्थ के कारण ही हुआ है। हिन्दी दलित साहित्य के आलोचकों में डॉ. धर्मवीर भारती, कंवल भारती, ओमप्रकाश वाल्मिकी, जयप्रकाश कर्दम, डॉ.एन.सिंह पुरूषोत्तम सत्यप्रेमी तेज सिंह, श्योराज सिंह, बेचैन, डॉ. कुसुम मेघवाल आदि ने हिन्दी दलित साहित्य की कई महत्वपूर्ण रचनाओं की समीक्षा की है। दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र में ओमप्रकाश वाल्मिकी ने दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र के विकास के लिए अभिजात्य वर्ग द्वारा स्थापित पारम्परिक साहित्य के मूल्यांकन के मापदण्डों से भिन्न सामाजिक यथार्थ के आधार पर निर्धारित किये है। हिन्दी साहित्य की आलोचना की परम्परागत शास्त्रीय सिद्धांतों को खारिज करते हुये सामाजिक यथार्थ के आधार पर निर्धारित मापदण्डों को दृष्टि में रखकर दलित साहित्य की समीक्षा करती है। हीरा डोम ने भोजपुरी में जो अछूत की शिकायत लिखी थी, उसमें यह दयनीय सच उजागर किया था कि दलित को 24 घण्टे मेहनत करनी पडती है। फिर भी महीने में दो रूप्ये नहीं मिलते है। इससे उस काल की सामाजिक स्थिति के बारे में एवं उनके जीवन संघर्ष को करीब से समझा जा सका है।

प्रमुख दलित साहित्यकार और उनकी रचनाएँ:-

आज भारत में अनेक भाषाओं में दलित साहित्य की रचना हो रही है। वर्तमान दलित साहित्य सबसे ज्यादा हिन्दी में लिखा जा रहा है। हिन्दी के दलित साहित्यकार दलित अधिकारों को बखूबी चित्रित कर रहे है। दलित साहित्य में अनुभव चिंतन की प्रधानता है। दलित लेखक बिम्ब-प्रतिबिम्ब प्रतीक और मिथक के सहारे नहीं टिका है बल्कि अनुभव और चिंतन पर आश्रित है।

- **तुलसीदास** - "मुर्दहिया" "मणिकर्णिका" आत्कथा
- **महात्मा फुले** - "गुलामगिरी" - पुस्तक (1875)
- **हीराडोम**- "अछूत" की शिकायत पुस्तक"
- **स्वामी अछूतानंद** - आदिवंश का डंका में गीत गजल भजन और रसिया के छंदों का मिश्रण किया है।
- **ओम प्रकाश वाल्मिकी**- सदियों का संताप, बस्स! बहुत हो चुका, अब और नहीं (कविता संग्रह), सलाम, घुसपैठिये (कहानी संग्रह), बाबा साहब अम्बेडकर जीवन परिचय (जीवन परक आलोचनात्मक पुस्तक) ।
- **मोहनदास नैमिशराय**- अपने-अपने पिंजरे (हिन्दी दलित साहित्य की प्रथम आत्मकथा), आज बाजार बंद है, क्या मुझे खरीदोगे, जख्म हमारे (उपन्यास), आवाजें, हमारा जवाब (कहानी संग्रह), बाबा साहब अम्बेडकर जीवन परिचय (जीवनपरक आलोचनात्मक पुस्तक) ।
- **सूरजपाल चौहान**- हैरी कब आएगा (कहानी संग्रह) तिरस्कृत (आत्मकथा), प्रयास, क्यों विश्वास करूं (कविता संग्रह), मातादीन भँगी (जीवनी)।

- **कॅवल भारती** - तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती (काव्य संग्रह), दलित विमर्श की भूमिका, दलित चिंतन और इस्लाम (चिंतन), डॉ. अम्बेडकर बौद्ध क्यों बने, दलित धर्म की अवधारणा, सन्त रैदास एक विश्लेषण आदि ।
- **डॉ. धर्मवीर** - किनारे भी मझधार भी, हीरामन (कविता संग्रह), नई सदी में कबीर (कबीर चिन्तन), चमार की बेटी रूपा, जूठन का लेखक कौन है (आलोचना) आदि।
- इसके अतिरिक्त श्यौराज सिंह बेचैन, जय प्रकाश कर्दम, दयाचंद बटोही, सत्यप्रकाश, कर्मशील भारती, रजनी रानी 'मीनू' तेज सिंह, उमराव सिंह जाटव, भगवान दास, सुभाष चन्द्र इत्यादि कई महत्वपूर्ण दलित लेखक अपनी रचनाओं से दलित साहित्य में निरन्तर वृद्धि कर रहे है।

भविष्य की दिशा:-

हिन्दी साहित्य में दलित विमर्श वर्तमान समय में जिस तेजी से आगे बढ रहा है। वह आने वाले समय में और सशक्त और व्यापक आयाम के साथ उभरेगा, यह साहित्य लेखन के माध्यम से दलित अस्तित्व, आत्मनिर्भरता और उनकी सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति को भी व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करेगा।

दलित लेखन को उत्साहित करने के प्रयास:-

दलित लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए समाज में उन्हें अवसर एवं मंच प्रदान किए जाने चाहिए एवं उनके लेखन को सम्मान एवं प्रशंसा की दृष्टि भी प्रदान की जानी चाहिये। इसके लिए साहित्यिक संगोष्ठियों प्रकाशनों और पाठ्यक्रमों को समावेशी बनाया जाना चाहिये। इससे न केवल दलित लेखन को प्रोत्साहन मिलेगा बल्कि समाज में सकारात्मक सोच का भी विकास होगा। और साहित्य का भी समृद्ध सृजन होगा।

निष्कर्ष:-

हैं सम्य सबसे हिन्द के, प्राचीन है हकदार हम। हाँ-हाँ! बनाया शूद्र हमको थे कभी सरदार हम।।

अब तो नही है वह जमाना, जुल्म हरिहर मत सहो। अब तो तोड दो जंजीर जकडे क्यों गुलामी में रहो।।

आधुनिक भारत में सामाजिक न्याय की स्थापना व दलित वर्गों के उत्थान के प्रति कटिबद्ध सामाजिक न्याय के उत्कृष्ट सेनानी डॉ. भीमराव अंबेडकर जिन्हें दलितों का मसीहा कहा जाता है। जिन्होंने दलितों के उत्थान करने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। लेकिन आधुनिक भारत की यह विडम्बना ही कही जाएगी कि लोकतांत्रिक विचारों और मूल्यों तथा समानता भाईचारे के प्रचार-प्रसार के बावजूद जातिगत भेदभाव और छुआ-छूत जैसी बीमारियाँ हमारे भारतीय समाज का अभिन्न अंग बनी हुई है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। अर्थात समाज के स्वरूप को साहित्य में उभारना ही साहित्य का कार्य है। लेकिन ओमप्रकाश बाल्मिकि का कहना है। कि हिन्दी साहित्य में ढूंढने पर भी हमे अपना चेहरा दिखायी नहीं देता। इस कारण दलितों को हिन्दी साहित्य की मुख्य धारा से हटकर सहित्य लेखन की आवश्यकता पडी, क्योंकि हिन्दी साहित्य में उनकी वास्तविक छवि को प्रस्तुत नहीं किया जा रहा था। उनके साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया जा रहा था। तभी दलित विमर्श का उदय हुआ और दलित साहित्य अस्तित्व में आया। हिन्दी दलित साहित्य को सर्वोच्च शिखर तक पहुँचाने में साहित्यकार लेखक ओमप्रकाश वाल्मिकि का सर्वाधिक योगदान रहा है। आधुनिक काल दलित साहित्य का स्वर्ण काल है। जिसमें दलित साहित्य का प्रसार एवं प्रभाव सर्वाधिक रूप से देखा जा सकता है। जिसमे भीमराव अम्बेडकर जैसे महापुरूषों की प्रेरणा दलित साहित्य को प्राप्त हुई है। उनका सपना था कि अपनी आर्थिक तंगी के बावजूद शिक्षा पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए, क्योंकि शिक्षा ही वह शस्त्र है, जिसके द्वारा समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है एवं जीवन को प्रगतिशील उच्चकोटि का बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. एस.एल.सागर, हरिजन कौन और कैसे, सागर प्रकाशन मैनपुरी, उ.प्र.2001, पृष्ठ-14
2. राजमोण शर्मा, दलित चेतना की कहानियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ-110
3. हरियाणा ठाकुर, दलित साहित्य का समाज शास्त्र, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ-46

4. हरदेव बाहरी, स्त्रोत, सुनीता कुशवाहा, उतर संस्कृति, दलित विमर्श और निराला, किशोर विद्या निकेतन, वाराणसी 2005, पृष्ठ-24

5. भोलानाथ तिवारी, स्त्रोत, अवधेश नारायण मित्र उत्तर संस्कृति, दलित विमर्श और निराला, किशोर विद्या निकेतन वाराणसी 2005, पृष्ठ-24

6. यशवंत रामकृष्ण दाते, महाराष्ट्र शब्दकोश, महाराष्ट्र कोश मण्डल लि. पुणे 1935, पृष्ठ-1619

7. किशोर कुणाल, दलित देवो भव, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, दिल्ली, 2005, पृष्ठ-7-9

8. कॅवल भारती, दलित साहित्य की अवधारणा, बोधिस्तव प्रकाशन, रामपुर, उ.प्र., 2006, पुष्ठ-15

9. मैनेजर पाण्डेय (स), वसुधा-58 (पत्रिका), जुलाई-सितम्बर, 2007 पृष्ठ-324

10. कॅवल भारती, दलित साहित्य की अवधारणा, बोधिस्तव प्रकाशन, रामपुर, उ.प्र. 2006 पृष्ठ-16

11. मुद्राराक्षस, नई सदी, की पहचान श्रेष्ठ दलित कहानियाँ लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004, पृष्ठ-06

12. सुभाष चन्द्र, दलित मुक्ति आंदोलन, आधार प्रकाशन पंचकूला, 2010 पृष्ठ-15

13. ओम प्रकाश बाल्मिकि दलि साहित्य का सौंदर्यशास्त्र राधाकृष्ण प्रकाश्ज्ञन दिल्ली 2001 पृष्ठ-09

14. प्रेमचन्द्र, गोदान, सरस्वती विहार, दिल्ली 1987 पृष्ठ-244

15. ओम प्रकाश बाल्मिकि, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2001 पृष्ठ-29

16. तेज सिंह, अम्बेडकरवादी साहित्य का समाजशास्त्र, किताब महल नई दिल्ली, 2007 पृष्ठ-25

17. निरंजन कुमार, मनुष्यता के आईने में दलित साहित्य का समाजशास्त्र अनामिका पब्लिशर्ज एण्ड डिस्ट्रीटयूटर्स, नई दिल्ली, 2010, पृष्ठ- 22,23